प्रकाशन तिथि : 01 अक्टूबर, 2020
प्रेषण तिथि : 04 अक्टूबर, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 14 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

संघर्ष के सारथी की सौंवी जयंती

आगामी 17 अक्टूबर 2020 को हम श्री क्षत्रिय युवक संघ के द्वितीय संघ प्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की 100वीं जयंती मनाने जा रहे हैं। 17 अक्टूबर 2019 को उनका जन्म शताब्दी वर्ष प्रारम्भ हुआ

था। श्री क्षत्रिय युवक संघ ने इस वर्ष को शताब्दी वर्ष के रूप में 100 कार्यक्रम कर मनाने का निर्णय किया। 17 अक्टूबर 2019 को एक साथ 24 स्थानों पर कार्यक्रम हुए। उसके बाद भी कार्यक्रम हुए। ग्रीष्मकालीन 11 दिवसीय शिविर के बाद सघन स्तर पर कार्यक्रम किए जाने थे लेकिन महामारी के कारण भौतिक रूप से कार्यक्रम करना संभव नहीं हुआ। अब आगामी दिनों में जयंती सप्ताह के दौरान विभिन्न कार्यक्रम कर उन संघर्ष के सारथी को नमन करने का कार्यक्रम बना है। पूज्य माट्साब का पूरा जीवन संघर्ष का पर्याय रहा है। स्वयं की पारिवारिक परिस्थितियों से संघर्ष। बचपन में आर्थिक विपन्नता से संघर्ष जो लगभग पूरे जीवन चलता रहा। आगे के जीवन में व्यक्तिगत जीवन में सभी प्रकार संघर्ष झेले, सत्ता से संघर्ष किया और जीवन के अंत में जानलेवा कैंसर से संघर्ष किया। लेकिन माट्साब के व्यक्तिगत जीवन के संघर्ष से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वे समाज के संघर्ष के सारथी बने। आजादी के समय सब कुछ छीने जाने की हीन भावना से ग्रसित समाज में आत्म सम्मान जागृत कर संघर्ष शील बने रहने के लिए खड़ा करने के गुरुत्तर कार्य के ध्वजवाहक बने पूज्य माट्साब।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

जागृति की प्यास की तीव्र करे : सरवड़ी

(माननीय महावीर सिंह का दायित्वाधीन स्वयंसेवकों से संवाद)

जागृति जीवन में निखार लाती है और ऐसा निखार ही प्रभाव पैदा करता है। यही प्रभाव संघ के प्रभाव को बढ़ाएगा। जीवन में निखार आए बिना प्रभाव पैदा नहीं होगा इसीलिए संघ इस प्यास को जगाता है। यह प्यास तीव्र होनी चाहिए। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने लिखा 'कितनी आग भरी तेरी प्यास में।' यह प्यास की तीव्रता व्यक्तिगत ही होगी। हमारे दूसरे सहयोगी इसमें सहयोग कर सकते हैं। संघ का नेतृत्व इसकी प्रेरणा दे सकता है लेकिन प्यास की तीव्रता तो व्यक्ति को स्वयं को ही बढ़ानी होगी और इसका सुंदर उपाय है आत्म चिंतन। आत्म चिंतन करेंगे तो कमियां दूर होंगी। कार्य पर आत्म चिंतन करें, संघ का जो दायित्व मिला हुआ है, वह मैं कितना कर पा रहा हूं इस पर आत्म चिंतन करें, साथ ही अपनी स्वयं की जागृति पर भी निरन्तर आत्म चिंतन करते रहें।

27 सितम्बर को सभी प्रांत प्रमुखों, संभाग प्रमुखों, केन्द्रीय विभाग प्रमुखों, केन्द्रीय कार्यकारियों आदि सब दायित्वाधीन स्वयंसेवकों के साथ संवाद करते हुए माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि संघ की प्रक्रिया में कार्यालय का महत्व बताया गया है। वह कार्यालय क्या है? हर दायित्वाधीन स्वयंसेवक का व्यक्तिगत लेखा-जोखा ही कार्यालय है। आपका अपने क्षेत्र के स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के साथ जो मधुर संपर्क है वहीं कार्यालयी कार्य है। इस कार्य का प्रयास निरन्तर जारी रखे। जो भी काम करें उसका लेखा-जोखा रखें। नियमित रूप से जैसा बताया गया है वैसी रिपोर्टिंग करते रहें। यदि आप समय पर रिपोर्ट नहीं भेज रहे हैं, इसका अर्थ है आपका कार्यालय सही काम नहीं कर रहा है इसीलिए यह सावधानी बनाए रखें। उन्होंने कहा कि जीवन में परिस्थितियां परिवर्तित होती रहती हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

ख्यातिनाम राजनेता जसवंतसिंह का देहावसान

(माननीय संघ प्रमुख श्री ने दी श्रद्धांजलि)

पूर्व रक्षा, वित्त एवं विदेश मंत्री, योजना आयोज के पूर्व उपाध्यक्ष, राज्यसभा के पूर्व नेता प्रतिपक्ष एवं नौ बार के सांसद जसवंतसिंह जी का 27 सितम्बर को प्रातः देहावसान हो गया। अपनी ईमानदारी, साहस, कूटनीति, अध्ययनशीलता, रणनीति, स्पष्टता व पारदर्शिता के लिए प्रसिद्ध जसवंतसिंह जी का माननीय संघ प्रमुख श्री का निकट सम्पर्क रहा। उनके देहावसान पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि उनका निधन समाज एवं राष्ट्र की बहुत बड़ी क्षति है। वे काम करने में भरोसा रखने वाले व्यक्ति थे, प्रशंसा में नहीं। उनका व्यवहार एक अनुशासित सिपाही के समान था। व्यक्ति के जाने के बाद स्मृतियां ही शेष रहती हैं वैसे ही मुझे उनकी स्मृतियां याद आ रही हैं। मैं जब कभी उनसे मिलने गया मुझे लेने दरवाजे तक आए एवं पास में बैठाकर प्रेम से मेरी बात सुनी। जब किसी कार्य के लिए मैंने आभार जताया तो यही कहा कि यह मेरी ड्यूटी थी। मैं कर्त्तव्यपालन में

विश्वास करता हूं, प्रशंसा में नहीं। राज्यसभा एवं लोकसभा में लोग उन्हें स्तब्ध हो सुना करते थे। उनके बोलने से ऊर्जा का प्रसार होता था। मेरे दृष्टिकोण से समाज एवं राष्ट्र को उन्होंने बहुत कुछ दिया। समाज या राष्ट्र इसे किस रूप में लेता है यह उनका दृष्टिकोण है। मैं सोचता हूं कि वे युगों-युगों तक याद किए जाएंगे। 27 सितम्बर को जोधपुर में उनका अन्तिम संस्कार किया गया। राष्ट्र के सभी गणमान्य लोगों ने उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'बदलते दृश्य' में शेखावटी के संस्थापक राव शेखाजी का उल्लेख किया है। इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

क्षत्रिय कुल में समय-समय पर, हर युग में ऐसे महान नररत्नों ने जन्म लिया है जिन्होंने अपने सुकृत्यों से ना केवल अपने कुल को, समाज को वरन् सम्पूर्ण मानवता को गौरवान्वित किया है। ऐसी श्रेष्ठ परम्परा में जन्म लेने वाले महापुरुषों में से एक थे- राव शेखा जी। राव शेखा जी का काल राजस्थान के इतिहास में परिवर्तन का काल था। उन्होंने अपने पुरुषार्थ से एक छोटे से करद ठिकाने को एक विशाल स्वतंत्र राज्य में बदल दिया। स्वतंत्रता व स्त्री की मर्यादा रक्षा के लिए जीवन भर संघर्षरत रहकर उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया। आमेर के शासक उदयकर्ण जी के पुत्र बालाजी को पिता की मृत्युपरांत बरवाड़ा की जागीर मिली। बालाजी के बाद उनके पुत्र मोकल जी बरवाड़ा के शासक बने। मोकल जी के प्रौढ़ावस्था तक कोई पुत्र नहीं हुआ इससे वो परेशान रहने लगे, किसी संत के परामर्श से वो वृन्दावन गए। वहां अनेक संतों से मिले जिससे उनके मन को शांति मिली। वृन्दावन से लौटने के बाद उन्होंने अपना अधिकांश समय गौ-सेवा में बिताना शुरू कर दिया। गायों को चराने के लिए वो स्वयं उन्हें जंगल ले जाने लगे। जहां उन्हें शेख बुरहान नामक एक फकीर मिला, श्रद्धालु राव मोकल जी उस फकीर की सेवा करने लगे जिससे प्रसन्न होकर उस फकीर ने भी उन्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया। अनवरत गौ सेवा और संत-फकीरों की सेवा के फलस्वरूप वि.सं. 1490 को विजयादशमी के दिन उनकी निर्वाण रानी से उनके पुत्र शेखा का जन्म हुआ। वि.सं. 1502 में मोकल जी की मृत्यु के बाद मात्र बारह वर्ष की आयु में शेखा जी बरवाड़ा के शासक बने और उनके काका खींवराज जी उनके संरक्षक हुए। सोलह वर्ष की अवस्था तक पहुंचते-पहुंचते शेखाजी ने शासन का सारा प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया। राव शेखाजी एक महत्वकांक्षी व साहसी युवा थे जो अपने पैत्रक राज्य का विस्तार करना चाहते थे। राज्य विस्तार की भावना से सर्वप्रथम उन्होंने नागरचाल के सांखलों पर आक्रमण किया। उन्होंने जांजा पर आक्रमण कर सांखलों को परास्त कर उस पर अधिकार कर लिया। शेखाजी का मुकाबला करने के लिए सभी सांखला सांईवाड़ में नापाजी सांखला के पास इकट्ठे हुए। नापाजी एक वीर शासक थे, उन्होंने शेखाजी के आक्रमण का सामना करने की समस्त तैयारी के बाद उन्हें एक संदेश भेजा :

'जाजां जाण न आजे सेखा, आ छै सांईवाड़।
ओ नापो हरिराम को, देलो तनै बिगाड़।'

वीर शेखा, जिनमें राज्य विस्तार की महत्वकांक्षा हिलौरे मार रही थी, ने अपनी सेना के साथ सांईवाड़ पर आक्रमण कर दिया। कडे संघर्ष के बाद संगठित सांखला शक्ति परास्त हुई और सम्पूर्ण सांखला राज्यों पर शेखा जी का अधिकार हो गया। नागरचाल पर अधिकार के बाद शेखा जी भेड़, बैराठ के टांको और यादवों पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर उनके राज्य को भी अपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार कुछ ही समय में उन्होंने बरवाड़ा की छोटी सी जागीर को एक विशाल राज्य में बदल दिया। अब उन्होंने नई राजधानी के विचार से वि.सं. 1517 को अमरसर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाई। इसी समय पन्नी पठानों का एक दल आजीविका की खोज में दक्षिण की ओर जा रहा था, शेखाजी ने उन्हें अपनी सेवा में रख लिया और उन्हें बारह गांव दिए जो पठानों की बारह बस्तियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। पन्नी पठानों के आने से शेखा जी की सैन्य शक्ति में भी वृद्धि हुई। बालाजी के समय से ही पैत्रक राज्य आमेर को कर स्वरूप बछेरे देने की परम्परा चली आ रही थी परन्तु शेखाजी को ये परम्परा अधीनता की लगी। उन्होंने आमेर को प्रतिवर्ष बछेरे भेजे जाने की परम्परा को बंद कर दिया। तात्कालीन आमेर शासक उद्धरण जी द्वारा इस बारे में पूछे जाने पर शेखा जी ने उत्तर भिजवाया कि आप परिवार के मुखिया है, जब भी आप अमरसर पधारेंगे, मेरे द्वारा आपका यथोचित सम्मान किया जाएगा, आपको भेंट स्वरूप बछेरे भी दूंगा, पर प्रतिवर्ष कर के रूप में बछेरे नहीं दूंगा। उद्धरण जी के बाद वि.सं. 1525 में चन्द्रसेन जी आमेर के शासक हुए। वे इस बात को लेकर शेखाजी से नाराज हो गए। उनके और शेखाजी की सेना के मध्य कई युद्ध हुए जिनमें से बरवाड़ा, नांण, धोली और कुकस के युद्धों का वर्णन अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थों में मिलता है। मौजमाबाद और भैराणा के शासक नरूजी (जिनसे कच्छवाहों की नरुका शाखा चली) के प्रयासों से आमेर के शासक चन्द्रसेन जी और शेखा जी के मध्य समझौता हुआ जिसके तहत शेखाजी को स्वतंत्र शासक मान लिया गया। वि.सं. 1530 में मालवा के सुल्तान ग्यासुद्दीन के पुत्र नसीरुद्दीन ने आमेर पर आक्रमण किया। राव शेखाजी अपने पैतृक राज्य आमेर की रक्षा के लिए अपनी सेना सहित आमेर की ओर से युद्ध में सम्मिलित हुए। भांडारेज के पास संगठित कच्छवाहा शक्ति और मालवा की सेना के मध्य युद्ध हुआ जिसमें मालवा की सेना परास्त हुई, नासीरुद्दीन युद्ध क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ। राव शेखाजी के समय बागड़ क्षेत्र में क्यामखानी शासकों का अधिकार था। उस समय हांसी-हिसार के शासक अल्फ खां द्वारा एक स्वजातीय बन्धु के अपमान का बदला लेने के लिए राव शेखाजी द्वारा उस पर आक्रमण किया गया। भयंकर युद्ध में अल्फ खां मारा गया। उसकी समूल सैन्य शक्ति को नष्ट कर दिया गया। स्वयं शेखाजी भी इस युद्ध में गंभीर रूप से जख्मी हुए। इस युद्ध के बाद राव शेखाजी ने अमरसर से कुछ दूरी पर अरावली श्रृंखला में शिखरगढ नाम से एक मजबूत दुर्ग का निर्माण करवाया। शेखाजी की बढ़ती शक्ति से चिन्तित दिल्ली सुल्तान बहलोत लोदी ने एक सेना शेखाजी के विरुद्ध भेजी। सुल्तान की सेना ने शिखरगढ़ दुर्ग पर घेरा डाल दिया, कई दिनों के घेरे के बाद भी जब पठान सेना को सफलता नहीं मिली तो वो घेरा उठाकर वापिस लौट गई। लौटती मुस्लिम सेना को शेखाजी के सैनिकों ने आक्रमण कर खूब लूटा। एक स्त्री के सम्मान की रक्षा के लिए राव शेखाजी का अपने निकट संबंधियों गौड़ों से युद्ध हुआ। गौड़ाटी प्रदेश के एक ठिकाने झूंथर से शासक कौलवराज द्वारा अपने राज्य की सीमा पर एक तालाब का निर्माण करवाया जा रहा था। जो भी उस मार्ग से गुजता उसे मिट्टी तालाब से बाहर डालनी पड़ती। एक कच्छवाह राजपूत अपनी पत्नी के साथ जब उधर से गुजर रहा था तब गौड़ों ने उसे भी इस कार्य के लिए विवश किया लेकिन जब उदण्ड गौड़ सैनिकों ने उसकी पत्नी से भी जबरदस्ती तालाब से मिट्टी बाहर डलवाने का प्रयास किया तो उसके और गौड़ सैनिकों के मध्य संघर्ष में वो कच्छवाह राजपूत मारा गया। उसकी मृत्यु के बाद उसकी पत्नी से तालाब से मिट्टी बाहर डलवाई गई। आततायियों के अत्याचार की शिकार वह राजपूतानी न्याय के लिए शेखाजी के पास पहुंची। शेखाजी ने उसे धैर्य बंधाया और उसके अपमान का बदला लेने के लिए गौड़ शासक कौलवराज पर आक्रमण किया। युद्ध में शेखाजी ने कौलवराज को मार दिया और उसके सिर को काट कर अमरसर के द्वार पर लगा दिया। ताकि उच्छृंखल व आततायी लोगों में भय पैदा हो परन्तु गौड़ो ने इसे अपना जातीय अपमान समझा। जनश्रुति है कि इसके बाद शेखाजी और गौड़ो के मध्य नौ (कहीं-कहीं ग्यारह उल्लेख) युद्ध हुए जिनमें हर बार शेखाजी की विजय हुई। अंतिम बार सभी गौड़ों ने गौड़ों के पाटवी मारोठ के राव रिड़मल के नेतृत्व में संगठित हो शेखाजी को रण निमंत्रण भेजा।

'गौड़ बुलावे घाटवा, चढ़ आवे शेखा।
लस्कर थारा मारणां, देखण का अभलेखा।।'

रण निमंत्रण पाकर शेखा जी अपनी सेना सहित गौड़ों से युद्ध के लिए चल पड़े। जीण माता के नजदीक उन्होंने अपना सैन्य शिविर कायम किया। गौड़ों से प्रथम भिड़ंत खूटिया तालाब के पास हुई। इस युद्ध में शेखाजी के पुत्र दुर्गाजी कौलवराज गौड़ के पुत्र मूलराज से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। क्रोधित शेखाजी ने शस्त्र के एक ही प्रहार से मूलराज को मार कर पुत्र का बदला लिया। शेखाजी के पुत्र पूर्णमल जी ने घाटवा के पास सेना का मोर्चा जमाया तो गौड़ सेना ने भी घाटवा के पास मोर्चे जमा लिए। घाटवा के इस युद्ध क्षेत्र में दोनों सेनाओं के मध्य जबरदस्त युद्ध हुआ, पूर्णमल जी वीरगति को प्राप्त हुए। शेखाजी के भी इस युद्ध में सोलह घाव लगे, ऐसी स्थिति में भी अपने पराक्रम से गौड़ों को पराजित कर अपने सैन्य शिविर लौटे। वहां अपने छोटे पुत्र रायमल जी को अपनी ढाल और तलवार सौंपकर अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। वि.सं. 1545 वैशाख शुक्ला तृतीया (अक्षय तृतीया) को घावों से क्षत विक्षत अनेक युद्धों के विजेता राव शेखा धरा पर अपनी अक्षय कीर्ति छोड़ कर चिर निद्रा में चले गए। रलावता ग्राम में उनका दाह संस्कार किया गया। शेखावत राजपूतों के आदि पुरुष और शेखावत राज्य के सृष्टा, स्त्री की मर्यादा रक्षा के लिए अपने संबंधियों से जीवन पर्यन्त संघर्षरत रहने वाले शेखाजी इस परम्परा के पथिकों को सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ : (1) राव शेखा (सुरजनसिंह जी झाझड़)
(2) शेखावत और उनका समय (रघुनाथ सिंह काली पहाड़ी)।

- खींवसिंह सुल्ताना

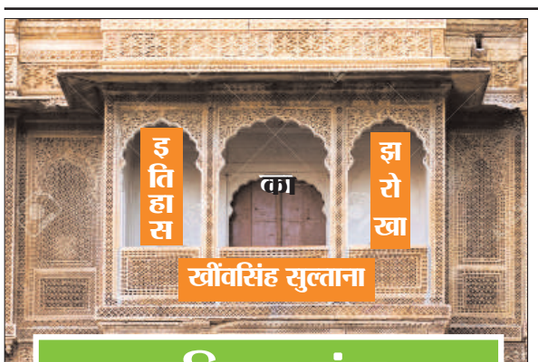

प्रतिहार वंश

नागभट्ट द्वितीय के बाद उसका निर्बल और अयोग्य पुत्र रामभद्र शासक बना। उसकी दुर्बलता और शासकीय अक्षमताओं को देख प्रतिहार राज्य के अधीनस्थ प्रांतों के राज्यपालों ने अवसर का लाभ उठाते हुए स्वतंत्र शासकों की भांति आचरण करना प्रारम्भ कर दिया। पालों ने भी उसे परास्त कर राज्य के अनेक भागों पर अधिकार कर लिया। उसका शासन अल्प समय (तीन वर्षों) तक ही रहा। रामभद्र के बाद प्रतिहार साम्राज्य की बागडोर उसके पुत्र मिहिर भोज के हाथों में आई, मिहिर भोज 836 ई में प्रतिहार साम्राज्य का शासक बना। मिहिर भोज की उपलब्धियों के बारे में सूचना अनेक लेखों में मिलती है जिनमें सबसे प्रमुख है उसकी 'ग्वालियर प्रशस्ति'। इसके अतिरिक्त अरब लेखों के विवरण जिनमें सुलेमान प्रमुख है, से भी मिहिर भोज के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं के बारे में पता चलता है। प्रशासन में आई कमियों को दूर करते हुए सर्वप्रथम मिहिर भोज ने अपने पिता के शासन काल में स्वतंत्र हुए अपने प्रान्तों को पुनः अपनी अधीनता में लिया। उसने मध्य भारत और राजपूताना में सैन्य अभियान कर छोटे-छोटे राज्यों को विजित कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया। लेकिन इसके उपरान्त उसे उस समय की दो प्रबल शक्तियों पाल शासक देवपाल और राष्ट्रकूट शासक ध्रुव से परास्त होना पड़ा जिसके कारण कुछ समय के लिए एक बार पुनः प्रतिहार शासक की विजय यात्रा अवरुद्ध हो गई। परन्तु कुछ समय बाद पाल शासक देवपाल की मृत्यु और राष्ट्रकूट की आन्तरिक उलझनों ने मिहिर भोज को अपने साम्राज्य का विस्तार करने का अवसर प्रदान किया। मिहिर भोज ने अपने मित्रों चेदिवंश और गुहिल वंश की सहायता से पाल शासक नारायण पाल को बुरी तरह परास्त किया और पाल साम्राज्य के पश्चिमी भाग पर प्रतिहारों का अधिकार हो गया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रांत प्रमुखों के साथ संवाद संपन्न

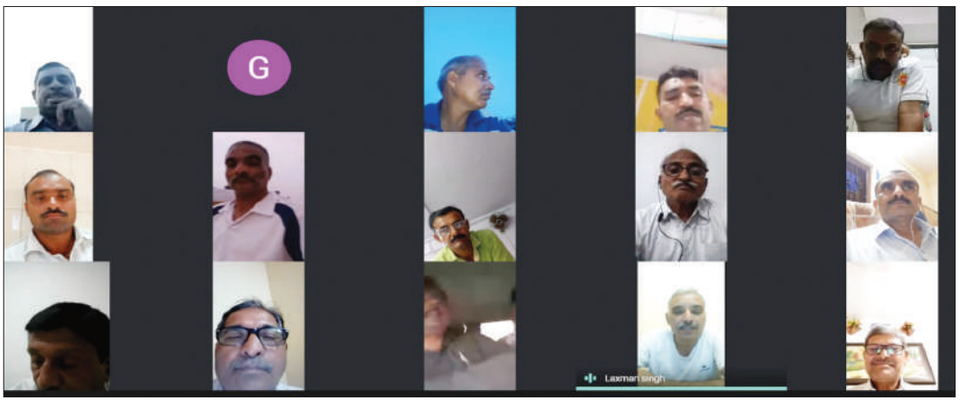

संघ के संचालन प्रमुख एवं केन्द्रीय कार्यकारियों के साथ संभागवार प्रांत प्रमुखों का 11 सितम्बर से प्रारम्भ हुआ संवाद 17 सितम्बर को पूर्ण हुआ। 11 व 12 को नागौर, जयपुर तथा मेवाड़ मालवा व जालोर संभाग की बैठक के बाद 13 सितम्बर को मेवाड़ वागड़ व बीकानेर व मध्य गुजरात के प्रांत प्रमुखों से वर्चुअल संवाद किया गया। 14 सितम्बर को जोधपुर व बाड़मेर, 15 सितम्बर को महाराष्ट्र व गोहिलवाड़, 16 सितम्बर को बालोतरा व महेसाणा तथा 17 सितम्बर को पोकरण व जैसलमेर संभाग के प्रांत प्रमुखों के साथ बैठक की गई। बैठक में संचालन प्रमुख जी ने बताया कि प्रांत प्रमुख अपने प्रांत का प्रबंधक होता है। वह माननीय संघ प्रमुख श्री का प्रतिनिधि होता है। उसका अपने प्रांत के सभी स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों से निरन्तर संवाद होना चाहिए। उसको स्वयं को सक्रिय रहना है। प्रतिदिन आवश्यक रूप से स्वयं एक घंटा शाखा के निमित्त देना है लेकिन इससे भी अधिक दायित्व यह है कि अपने प्रांत के सभी स्वयंसेवकों को सक्रिय रखे। उनका प्रबंधन करे। प्रांत प्रमुख के पास अपने प्रांत की सभी सूचनाएं अद्यतन रहनी चाहिए। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने कहा कि प्रांत प्रमुख अपने प्रांत के अभिभावक जैसे है। उन्हें हर स्वयंसेवक की सभी परिस्थितियों की जानकारी होनी चाहिए। प्रांत प्रमुखों ने भी अपने अपने प्रांत की रिपोर्ट पेश की एवं कार्य में आ रही समस्याओं के बारे में भी चर्चा की।

माइलस्टोन एकेडमी में मार्गदर्शन संवाद

अपने बाड़मेर प्रवास के दौरान वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी महेंद्र प्रताप सिंह भाटी ने माइलस्टोन एकैडमी बाड़मेर के तत्वाधान में संचालित माइलस्टोन प्रतियोगी सदन में प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। अपने जीवन के संघर्ष की कहानी एवं संस्मरणों को उनके बीच साझा कर उन्हें अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रेरित किया। नरेंद्र सिंह RAS ने बच्चों को अधिक से अधिक मेहनत करने एवं रिवीजन पर ज्यादा जोर देने की बात कही। माइलस्टोन प्रतियोगी सदन प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वालों के लिए बाड़मेर में एक नई पहल है जो मात्र 3500 रुपए मासिक में आवासीय व्यवस्था सहित अध्ययन की सुविधा उपलब्ध करवाता है। इसमें प्रतिदिन मार्गदर्शक मंडल द्वारा बच्चों की समस्याओं का समाधान किया जाता है। इस अवसर पर मार्गदर्शक मंडल के सदस्य गणपत सिंह हूरों का तला, कान सिंह खारा, आसु सिंह खारा, युवराज सिंह जान सिंह की बेरी उपस्थित रहे।

सहयोगियों एवं समाज बंधुओं से संवाद जारी

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन द्वारा अपने सहयोगियों एवं समाज के विभिन्न वर्गों के समाज बंधुओं के साथ संवाद की श्रृंखला इस पखवाड़े भी जारी रही। 13 सितम्बर को चौहटन के निवर्तमान सरपंचों एवं उप सरपंचों के साथ वर्चुअल बैठक आयोजित की गई। इसी दिन नागौर जिले में विभिन्न विधानसभाओं में फाउंडेशन के सहयोगियों के साथ वर्चुअल संवाद हेतु गुगल मीट आयोजित की गई। चल रहे कार्य की समीक्षा की गई एवं आगामी समय के लिए कार्य योजना बनाई गई। इसी दिन जैसलमेर टीम ने रामगढ़ में एक भौतिक बैठक का आयोजन कर फाउंडेशन की कार्य प्रणाली की जानकारी दी। 15 सितम्बर को बीकानेर जिले की नोखा पंचायत समिति के नव निर्वाचित सरपंचों के साथ एक वर्चुअल बैठक आयोजित की गई। 17 सितम्बर को जालोर जिले के कुछ नवपदस्थापित शिक्षकों के साथ बैठक कर उन्हें फाउंडेशन के उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली की जानकारी दी गई एवं वे इसमें किस प्रकार सहयोगी हो सकते हैं, इस पर चर्चा की गई। इसी दिन पाली जिले के सक्रिय साथियों ने आपसी संवाद कायम कर कार्य की समीक्षा की। 18 सितम्बर को डेयरी उद्योग में अवसर एवं नवाचार विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया जिसमें बीकानेर में फाउंडेशन के सहयोगी एवं 'काऊ बेल्स' दूध ब्रांड के संस्थापक नवीनसिंह भवाद ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने एक डेयरी की स्थापना के लिए आवश्यक योग्यताओं, परिस्थिति एवं संसाधनों के बारे में विस्तार से बताया। साथ ही प्रक्रियागत जानकारी देते हुए इसमें जीविकाऊर्जन की संभावनाओं की जानकारी दी। 20 सितम्बर को फाउंडेशन की पाक्षिक समीक्षा बैठक रखी गई जिसमें सभी साथी जुड़े। विगत 15 दिन के काम एवं अगामी 15 दिन की कार्य योजना बनाई। इसी बीच शिव के बरसिंगा में मेघवाल समाज एवं राजपूत समाज के कुछ लोगों के बीच हुई आपराधिक मारपीट को लेकर बाड़मेर टीम द्वारा जिला कलक्टर बाड़मेर को ज्ञापन दिया गया एवं न्यायपूर्ण कार्रवाई की मांग की गई। 25 सितम्बर को डूंगरपुर में वर्ग विशेष के लोगों द्वारा किए गए हिंसक प्रदर्शन के दबाव में आकर सामान्य वर्ग के

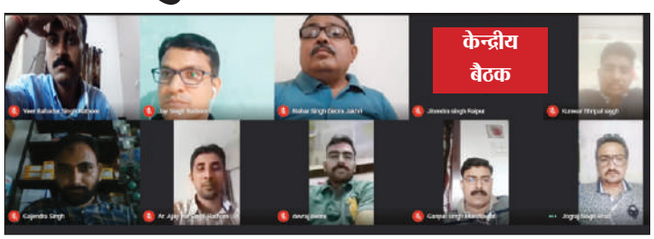

हितों के साथ कुठाराघात न करने का पत्र मुख्यमंत्री जी को लिखा गया। 26 सितम्बर को सूचना तकनीक क्षेत्र में रोजगार संबंधी वेबिनार की सीरिज में Data Analystics विषय पर वेबिनार आयोजित की गई। 27 सितम्बर को जयपुर टीम द्वारा शिक्षकों की एक गूगल मीट आयोजित की गई।

प्रज्ञा कंवर बनी अमेरिकन लेफ्टिनेंट

झुंझुनूं जिले के जाखल गांव की मूल निवासी प्रज्ञा कंवर अमेरिकन एयरफोर्स में लेफ्टिनेंट के पद पर चयनित हुई है। वैज्ञानिक पिता दुष्यन्त सिंह एवं शिक्षक माता अर्चना कंवर की पुत्री प्रज्ञा कंवर का जन्म अमेरिका में ही हुआ। उनके भाई सुबीर सिंह भी अमेरिकन एयरफोर्स में कैप्टेन हैं। पिता वर्षों पूर्व अमेरिका चले गए थे।

महेन्द्र प्रताप सिंह बने लेफ्टिनेंट

राजस्थान प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी महेन्द्र प्रताप सिंह गिराब प्रादेशिक सेना में लेफ्टिनेंट के पद पर चयनित हुए हैं। प्रादेशिक सेना भारतीय सेना का ऐसा भाग है जिसमें आम नागरिक उसकी सभी अहर्ताएं पूरी कर स्वैच्छिक रूप से वर्ष में एक सीमित समय के लिए सेना में सेवा दे सकता है। इसमें चयन के कड़े प्रतिमान होते हैं इसीलिए इसमें चयन एवं सेवा दोनों ही विशेष गर्व की बात मानी जाती है। महेन्द्र प्रताप सिंह राजस्थान प्रशासनिक सेवा के संभवतः पहले अधिकारी हैं जिनका इसके लिए चयन हुआ है। अब वे वर्ष में दो माह सेना में सेवा देंगे।

संपादकीय

जैविक एवं यांत्रिक एकता

एक बीज को जब भूमि में बोया जाता है तो वह अपने कठोर आवरण को तोड़ता है और स्वयं का पेट चीरकर अंकुरित होता है। वह कोमल सा अंकुरण कठोर धरती को भी चीर कर बाहर निकलता है। कालांतर में बड़ा होता है, पल्लवित होता है, पुष्पित होता है और फलित होता है। वह फल जब सूखता है तो उसमें से उसी मूल बीज जैसे अनेकों बीज उत्पन्न होते हैं। उन सभी बीजों में वे सभी गुण एवं तत्व मौजूद होते हैं जो उस मूल बीज में विद्यमान थे। यही जैविक एकता है। इसे ही तात्विक एकता कहा जा सकता है। इसमें एक ही तत्व का प्रसार होता है। दूसरी प्रकार की एकता यांत्रिक एकता होती है। एक मैकेनिक एक कार बनाता है। वह कार के विभिन्न पूर्जों को जोड़ता है। हर पूर्जे की अपनी उपयोगिता होती है और ऐसे सभी पूर्जे मिलकर कार बनते हैं। जब सब मिल जाते हैं तो वह कार कहलाते हैं लेकिन बिखरे हुए हैं तब तक कार नहीं है। उनमें तत्वगत समानता नहीं होती बल्कि प्रत्येक का अपना पृथक अस्तित्व होता है और साथ होने पर वे बड़े अस्तित्व में रुपांतरित होते हैं, एक बड़ा यंत्र बनते हैं लेकिन बिखरने पर सब अलग-अलग अपनी पूर्व स्थिति में पहुंच जाते हैं। कार नहीं कहलाते बल्कि अपनी स्वयं की पहचान से परिभाषित होते हैं। ऐसे पूर्जे कार में जुड़ने के बावजूद भी कार के अन्दर अपना पृथक अस्तित्व बरकरार रखते हैं, अपना इकाई के रूप में महत्व बरकरार रखते हैं। वे मिलते नहीं बल्कि जुड़ते हैं और जब तक जुड़े रहते हैं तब तक ही उस स्थिति में सार्थक रहते हैं। यदि स्टेयरिंग को कार से अलग कर छोड़ दें तो उसका उस रूप में कोई उपयोग नहीं रहता। इस प्रकार के पूर्जों के संयोजन से बनने वाली एकता यांत्रिक एकता कहलाती है।

इन दोनों एकताओं की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न है। प्रथम एकता की प्रक्रिया एक से अनेक होना है। प्रारम्भ में एक बीज होता है। वह अपने आपको मिटाता है और अपने जैसे अनेक बीजों का निर्माण करता है जो उन्हीं तत्वों का प्रसार करते हैं जो उस मूल बीज में थे। यही एक से अनेक होना है। दूसरी एकता की प्रक्रिया अनेक से एक होना है। इस प्रक्रिया में भिन्न-भिन्न स्वभाव एवं प्रकृति के पूर्जो को संयोजित किया जाता है और एक बड़ा यंत्र बनता है। इसमें अनेक को जोड़कर एक किया गया है। इसलिए यह प्रक्रिया अनेक से एक होना है। इस प्रकार एकता की दो प्रक्रिया प्रचलन में है, एक से अनेक होना व अनेक से एक होना। वर्तमान में एकता की जितनी बातें होती हैं वे सभी दूसरी प्रकार की प्रक्रिया की होती हैं। अनेक लोगों को मिलाकर येनकेन प्रकारेण एक दिखने का तरीका अपनाया जा रहा है इसीलिए बाहर से दिखने वाली ऐसी एकता अंदर से खोखली होती है। हल्के से धक्के से ही बिखर जाती है। ऐसी एकता में कार के पूर्जों की तरह हर इकाई अपना पृथक अस्तित्व बचा कर रखती है, उस अस्तित्व की महत्ता चाहती है, उस अस्तित्व की अपने उस संगठन से भी रक्षा करती है और अपना महत्व बरकरार रखते हुए विशिष्ट व्यवहार की अपेक्षा करती है। ऐसा न होने पर बिखरने को तत्पर रहती है। इसीलिए प्रायः ऐसी एकताएं बिखरती रहती हैं। यत्र तत्र ऐसे सैकड़ों उदाहरण देखे जा सकते हैं। दूसरी तरह की प्रक्रिया जो तात्विक एकता की है, एक से अनेक होने की है, वही वास्तविक एकता होती है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की प्रक्रिया इसी एकता की पोषक है। यहां पूज्य तनसिंह जी ने अपना अस्तित्व ही संघ रूप में स्थापित किया। स्वयं का सर्वस्व लगाकर इसका अंकुरण किया। उन्होंने अपना कुछ भी इससे बचाकर नहीं रखा और अपना उदर चीरकर इस संघ रूपी पौधे को अंकुरित किया। आज इस पौधे को पल्लवित, पुष्पित और फलित करने के जो प्रयास परमेश्वरीय प्रेरणा से हो रहे हैं वे उस मूल बीज के तत्वों को समेटे हुए नए बीज उत्पन्न करने के लिए किए जा रहे हैं। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ येनकेन प्रकारेण भानुमति का कुनबा नहीं जोड़ता बल्कि एक-एक पत्थर को धैर्यपूर्वक तरासता है ताकि उसमें जो कुछ भी पनपे अकाट्य बनकर पनपे और उन सभी तत्वों से परिपूर्ण हो पनपे जो इसके मूल में विद्यमान है। ऐसी तात्विक एकता ही हमें सृष्टि के मूल तत्व से भी एकाकार करने की ओर अग्रसर करती है। जो मानव जीवन का अंतिम उद्देश्य है। अनेक भाग्यशाली लोग अपने पूर्वजन्मों की अधूरी साधना को इस माध्यम से आगे बढ़ा रहे हैं और अपने मूल उद्गम को स्पर्श कर उसके सभी गुणों से परिपूर्ण होने को गतिशील हैं।

खरी-खरी

विश्वसनीयता का संकट

देश की राजनीति में नित नए भूचाल आते रहते हैं। इन दिनों कृषि क्षेत्र से संबंधित नए कानूनों को लेकर भूचाल आया हुआ है। सरकार द्वारा कहा जा रहा है कि हमने किसान को अपनी फसल स्वयं द्वारा तय की गई कीमत पर बेचने को स्वतंत्र कर दिया है। अब वे मंडियों में ही फसल बेचने को पाबंद नहीं हैं बल्कि अपनी मर्जी से पूरा मोल भाव करके अपनी फसल मंडियों से बाहर बेच सकेंगे। खड़ी फसल का सौदा कर सकेंगे। बड़ी कंपनियों से डील कर सकेंगे। इस प्रकार उन्हें अपनी आय बढ़ाने का पूरा अवसर होगा। दूसरी तरफ विपक्ष द्वारा कहा जा रहा है कि सरकार किसान विरोधी है। वह किसानों को संरक्षण प्रदान करने वाली न्यूनतम समर्थन मूल्य प्रणाली को समाप्त करने जा रही है। किसानों को बड़े-बड़े कॉर्पोरेट घरानों के गुलाम बनाने की ओर अग्रसर है। आम आदमी इस बात को लेकर असमंजस में है कि वह किसकी माने? कानून की बारीकियों को समझने की क्षमता पढ़े-लिखे लोगों में भी नहीं होती ऐसे में गांव में रहने वाले आम किसान किसकी बात को सही मानें। वह उस विपक्ष की बात को भी सही कैसे माने जिसने सत्ता में रहते इसी प्रकार का कानून बनाने की बात की थी। जिसने अपने चुनाव घोषणा पत्र में इसी प्रकार का कानून बनाने की बात की थी। सरकार के रहते जिसके मंत्री मंडी व्यवस्था के बिचौलियों को हटाने के लिए इसी प्रकार के कानून बनाने की पैरवी संसद में करते थे वही विपक्ष आज इस कानून का विरोध कर रहा है। विपक्ष की विश्वसनीयता तो पहले ही खंडित हो चुकी है तब ही तो विगत दो आम चुनावों में मतदाता उनके सफाए के स्तर का जनमत दिए जा रहा है।

तब क्या उसे सरकार की बात माननी चाहिए। किसान आशंका जता रहा है कि इस कानून से न्यूनतम समर्थन मूल्य की प्रणाली को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया जाएगा। मंडी व्यवस्था भी मिट जाएगी तब वह कॉर्पोरेट घरानों से हुए समझौतों के हवाले हो जाएगा। यह आशंका गलत नहीं है कि सम्पूर्ण सत्ता को अपने ईशारों पर चलाने की ताकत रखने वाले कॉर्पोरेट से असंगठित किसान कैसे अपने हितों की रक्षा कर सकेगा? बड़े-बड़े कॉर्पोरेट घरानों को सामान्य भावों में गेहूं बेचकर किसान का क्या उन्हीं घरानों से महंगा आटा खरीदने का मजबूर नहीं होगा? सरकार इन आशंकाओं का जवाब देते हुए कहती है कि सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य की प्रणाली बंद नहीं करने जा रही है, मंडी व्यवस्था को समाप्त नहीं करेगी। सरकार ने तो समय से पहले ही अभी हाल ही में बढ़े हुए न्यूनतम समर्थन मूल्यों की घोषणा भी कर दी है। लेकिन फिर भी किसान आंदोलनरत क्यों है? सरकार की बात का विश्वास क्यों नहीं किया जा रहा है? सरकार से संबंधित दल के बड़े-बड़े नेताओं द्वारा अखबारों में लिखे गए लेखों पर भरोसा क्यों नहीं किया जा रहा? सरकार कह रही है कि समर्थन मूल्य जारी रहेंगे। लेकिन फिर भी विश्वास नहीं किया जा रहा? यही विश्वसनीयता का संकट है। इसी संकट के कारण आज हमारे राजनेताओं का प्रभाव समाप्त होता जा रहा है। लोगों ने विश्वास नहीं किया हो ऐसा नहीं है, वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने नोटबंदी के समय विश्वास करने को कहा, लोगों ने कष्ट झेलकर भी विश्वास किया लेकिन परिणाम क्या निकला? वर्तमान प्रधानमंत्री जी ने कहा कि रेलों का निजीकरण नहीं होगा और वर्तमान में रेलों का ही नहीं रेल्वे स्टेशनों और हवाई अड्डों के भी निजीकरण करने की बात की जा रही है और फिर भी विश्वास करने को कहा जाता है। प्रधानमंत्री जी ने करोड़ों रोजगार पैदा करने की बात की और उनके विरोधियों को उनका जन्मदिन ही बेरोजगार दिवस के रूप में मनाने का अवसर मिला हुआ है। प्रधानमंत्री जी ने कहा कि किसानों को फसल की लागत का 50 प्रतिशत जोड़कर न्यूनमत समर्थन मूल्य घोषित किए जाएंगे लेकिन ऐसा हुआ नहीं। ऐसी अनेक बातें है जो जनता के विश्वास को डगमगाती है और इसीलिए विश्वसनीयता का संकट खड़ा हुआ है।

देश का दुर्भाग्य है कि देश अपने भाग्य विधाताओं की बात पर विश्वास नहीं करता और इससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है कि देश के नेता विश्वास करने लायक नहीं है। हम कह सकते है कि चुनावों के समय कही बातों का संज्ञान नहीं लेना चाहिए लेकिन जो लोग संज्ञान न लेने लायक वादे कर सत्ता में आते हों उनकी विश्वसनीयता बन भी कैसे सकती है? इसीलिए किसान मांग कर रहे हैं कि यदि सरकार की नीयत किसानों का हित करने की है तो वह न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी क्यों नहीं दे देती? वह कॉर्पोरेट घरानों के लिए भी न्यूनतम समर्थन मूल्य पर ही डील करने का नियम क्यों नहीं बनाती? क्यों कि कानून में ऐसा नहीं है और बातों पर विश्वास करने लायक हमारे नेता रहे नहीं है इसीलिए किसान के नाम पर भूचाल आया है। पक्ष-विपक्ष सभी अपने-अपने तरीके से हितैषी बनने का दावा कर रहे है और आम जनता किंकर्तव्यविमूढ़ है।

आऊवा की जंग और ठाकुर कुशालसिंह

31 दिसम्बर 1600 को इंगलैण्ड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना को स्वीकृति प्रदान की थी। इस कम्पनी ने भारत के तत्कालीन बादशाह जहांगीर से भारत में व्यापार करने की अनुमति प्राप्त कर यहां व्यापार प्रारम्भ किया। भारत में तब मुगल शासन पूर्ण रूप से चरमरा चुका था। देश अनेक रियासतों/साम्राज्यों में बंटा हुआ था। इन देशी रियासतों में आपसी फूट चरम पर थी। यहां की नाजुक स्थिति का फायदा उठाकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सन् 1757 में भारत को अपने आधिपत्य में ले लिया। कम्पनी जिसकी स्थापना व्यापार के उद्देश्य से की गई थी, उससे सुचारू रूप से सत्ता संभालने की अपेक्षा ही दोष पूर्ण थी और हुआ भी ऐसा ही। कम्पनी ने अपने व्यापारिक हितों को प्राथमिकता दी और शेष सभी दायित्वों को गौण समझा। रियासतों की आपसी फूट को बढ़ावा दे सत्ता की डोर संभालने का असफल प्रयास किया। राजपूताने में बड़े रियासतदारों के हितों की तो कम्पनी ने सुरक्षा सुनिश्चित की परन्तु यहां के सामन्तों के प्रति द्वेष भावना रख जागीर क्षेत्र में जनता की आंखों में सामंतों की प्रतिष्ठा कम करने के प्रयास किए। सामंतों को बाध्य किया कि वे सैनिकों को नगद वेतन देवें। सामंतों के न्यायिक अधिकारों को सीमित किया गया। उनके विशेषाधिकारों पर कुठाराघात किया गया। हड़प नीति के तहत गोद लेने और नाबालिग से संबंधित परम्पराओं में भी हस्तक्षेप किया। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि सामंतों का आम जनता पर जो प्रभाव था उसे कम करने के प्रयास किए गए। इन आपत्तिजनक नीतियों के कारण सामंतों में असंतोष फैलने लगा। क्षुब्ध होकर देश के सभी जागीरदारों/रजवाड़ों ने अंग्रेजी सत्ता का विरोध किया। उनके इसी असंतोष ने जन्म दिया आउवा जैसे सामरिक अभियानों को।

आउवा मारवाड़ रियासत का जागीर का गांव, जो राजस्थान के पाली जिले में स्थित है। जोधपुर के महाराजा मानसिंह के समय आउवा के ठाकुर माधोसिंह मारवाड़ के प्रभावशाली सामंत थे। एरिनपुरा छावनी आउवा के समीप ही थी। जहां पर जोधपुर लिजियन की एक सैनिक टुकड़ी तैनात थी। इस सैनिक टुकड़ी की कमान अंग्रेज अधिकारी करते थे। इस की बनावट, तीन ट्रूप कैवलरी, आठ कम्पनी पैदल सैनिक और दो तोपे (ऊंट गाड़ी में) पर आधारित थी। यहां के सैनिकों की भर्ती सन् 1836 में कैप्टन डाउनिंग की देखरेख में प्रारम्भ हुई थी। 1857 के विद्रोह में यहां के भील सैनिकों के अलावा सभी ने भाग लिया। सन् 1843 से 1873 तक महाराजा तखतसिंह मारवाड़ के शासक थे जिनके प्रति यहां के सामंतों में घोर असंतोष व्याप्त था। सन् 1857 की क्रांति के दौर में आउवा क्षेत्र स्वतंत्रता संग्राम के केन्द्र के रूप में उभर कर सामने आया। उस समय ठाकुर कुशालसिंह यहां के ओज पूर्ण प्रभावी शासक थे। 29 मार्च 1857 को बैरकपुर में मंगल पाण्डे द्वारा फूंके गए स्वतंत्रता संग्राम के शंखनाद की आवाज सभी सैनिक छावनियों में गूंजने लगी। ऐरनपुरा, डीसा, नसीराबाद और नीमच भी इससे अछूते नहीं रहे। सामंतों के खिलाफ की जा रही सत्ता की कार्रवाईयों और सैनिकों की बगावत ने समरांगण का निमंत्रण प्रेषित करने में किसी प्रकार की देरी और संकोच नहीं किया। 21 अगस्त 1857 को ऐरनपुरा छावनी के सैनिकों ने विद्रोह कर छावनी पर कब्जा कर लिया। विद्रोही सैनिकों ने 'चलो दिल्ली मारो फिरंगी' का नारा बुलंद कर दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। रास्ते में खेरना गांव में रुककर ठाकुर साहिब आउवा से सम्पर्क साधा। ठाकुर कुशालसिंह ने

विद्रोही सैनिकों का नेतृत्व करने और सभी प्रकार की सहायता प्रदान करने का आश्वासन दिया। मारवाड़ आंचल में विद्रोहियों की गतिविधियों ने अजमेर में तैनात ब्रिटिश अधिकारी जॉर्ज पैट्रिक लारेन्स की नींद हराम कर दी। उसने स्थिति पर नियंत्रण करने के लिए जोधपुर से अपनी सेना को तुरन्त आउवा के लिए कूच करने का आदेश दिया। जोधपुर की सेना के एक हजार पैदल सैनिक, पांच सौ घुड़सवार, चार तोपों के साथ मुस्ताक अली के नेतृत्व में और कर्नल हीथकोर की कमान में ब्रिटिश सेना की टुकड़ी आउवा की ओर चली आ रही थी। जोधपुर से आ रही अंग्रेजी सरकार की सेना का मुकाबला करने के लिए ठाकुर कुशालसिंह आउवा, ठाकुर बिशनसिंह गूलर, ठाकुर अजीतसिंह आलनियावास, शिवनाथ सिंह आसोप, सूबेदार मोती खां और दफादार अब्दुल अली के नेतृत्व में स्वतंत्रता सेनानी सज-धज कर जोधपुर की ओर चढ़ाई कर चुके थे। 8 सितम्बर 1857 को दोनों सेनाएं बिथोड़ा में टकराई और घमासान मचा जो दो दिन तक चलता रहा। इस युद्ध में जोधपुर के किलेदार ओनाड़सिंह पंवार और राजमल लौढ़ा रणखेत रहे। सिंघवी कुशलराज मेहता और विजयमल जान बचाकर भाग खड़े हुए। बिथोड़ा के युद्ध में स्वतंत्रता सेनानी विजयी रहे। सरकारी सेना की हार से अजमेर में खलबली मच गई। विद्रोहियों के हौसले पस्त करने और हार का बदला लेने के लिए एजीजी लारेन्स ने कैप्टन मेसन के नेतृत्व में सेना भेजी। 18 सितम्बर को चेलावास में युद्ध हुआ जो काले-गौरो के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। चेलावास के युद्ध में एक बार फिर सरकारी सेना को पराजय का मुंह देखना पड़ा। इस युद्ध में उनका सेनानायक कैप्टन मेसन भी मारा गया। विद्रोही सैनिकों ने मेसन का सर काटकर आउवा गढ के प्रवेश द्वार पर लटका दिया। आउवा से दो बार शिकस्त खाने से एएजी लारेन्स सकते में आ गया। आउवा में फिर से सेना भेजने का तय कर नसीराबाद, नीमच और महू की छावनियों से सैनिक इकट्ठे कर ब्रिगेडियर राबर्ट होम्स के नेतृत्व में एक मजबूत सेना का गठन किया गया। इस दौरान स्वतंत्रता सेनानी यहां से दिल्ली पहुंचने लगे। अंग्रेजी हुकूमत ने आसोप, गूलर और आलनियावास को अपने कब्जे में ले लिया।

20 जनवरी 1958 को पूरी तैयारी के साथ अंग्रेजी सेना ने आउवा गढ पर घेरा डाल दिया। जोधपुर की सैनिक टुकड़ी भी इस फोर्स के साथ थी। एक बार और मुठभेड़ हुई। दोनों ओर से अनेकों लोग हताहत हुए। 23 जनवरी 1858 को ठाकुर कुशालसिंह अपने सहयोगियो के सुझाव के मद्देनजर आउवा की सुरक्षा की जिम्मेदारी अपने अनुज पृथ्वीसिंह को देकर अपने कुछ साथियों के साथ अरावली की पहाड़ियों से होते हुए कोठारिया (मेवाड़) पहुंच गए। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजपूताने के जिन सामंतों ने योगदान दिया उनमें मेवाड़ आंचल से सलूम्बर, भीण्डर, लसानी, रूपनगर के साथ ही कोठारिया के रावत जोधसिंह अग्रणी रहे। वे क्रांतिकारी सैनिकों को निरन्तर सहयोग देते रहे और सुरक्षा प्रदान करते रहे। स्वतंत्रता संग्राम के विफल हो जाने के उपरान्त भी अंग्रेजी प्रभुत्व की चिंता किए बिना अभय रहकर शरणागत की रक्षा करते रहे और अंग्रेजी सत्ता विरोधी कार्यवाहियों में परोक्ष और अपरोक्ष रूप में सक्रिय रहे। ठाकुर कुशालसिंह आउवा का अंग्रेजों ने पीछा किया और कोठारिया पहुंचे किन्तु वहां से खाली हाथ ही लौटना पड़ा। आउवा ठाकुर कुशालसिंह भूमिगत रह कर भी छापा मार कार्यवाही को अंजाम देते रहे और अपना संघर्ष जारी रखा। होम्स ने आउवा में कत्ले आम करवाया और वहां की कुलदेवी 'सुगाली माता' (12 सिर और 54 हाथ) की मूर्ति को भी अपने साथ ले गया। 8 अगस्त 1860 को ठाकुर कुशालसिंह ने अपने आपको अंग्रेजों के हाथ सुपुर्द कर दिया। मेजर टेलर की अध्यक्षता में आउवा ठाकुर पर लगे आरोपों की जांच के लिए एक आयोग का गठन हुआ जिसने ठाकुर कुशालसिंह को निर्दोष पाया। 25 जुलाई 1864 को ठाकुर कुशालसिंह आउवा का बेगू की हवेली-उदयपुर में निधन हो गया। राजस्थान सरकार के आदेश पर आउवा में प्रदेश का सबसे बड़ा शहीद स्मारक निर्माणाधीन है जिसके लिए बजट में दस करोड़ रुपए का प्रावधान रखा गया है। यह सत्य है कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का केन्द्र उत्तरप्रदेश रहा है परन्तु आउवा की लड़ाई भी इतनी ही महत्वपूर्ण रही है और ठाकुर कुशालसिंह का योगदान भी तात्यां टोपे और झांसी की राणी से कम नहीं आंका जा सकता। प्रातः स्मर्णीय ठाकुर कुशालसिंह आउवा और ठाकुर शिवनाथसिंह आसोप की राष्ट्र भक्ति, शौर्य और बलिदान की प्रशंसा की झलक मारवाड़ आंचल के लोक गीतों में खूब मिलती है।

(आउवा ने आसोप घणियां मोतियां री भाला रे...)

- कर्नल हिम्मतसिंह पीह

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

शाखा अमृत

वर्चुअल शाखा में प्रत्येक रविवार को माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा 18-28 मई, 2018 तक आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर, गनोड़ा (बांसवाड़ा) में प्रदत्त उद्बोधनों का क्रमशः प्रसारण किया जा रहा है। प्रस्तुत है 16 अगस्त से 27 सितंबर तक प्रसारित उद्बोधनों का सारांश..

मेरे प्रिय आत्मीयजन, हम जो यह ग्यारह दिवसीय शिविर रूपी अनुष्ठान का आयोजन कर रहे हैं यह किसी सांसारिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए नहीं है। यह दिव्य अनुष्ठान है क्योंकि संघ स्वयं में सम्पूर्ण योग मार्ग है। योग का अर्थ है आत्मा और परमात्मा का मिलन। संघ की साधना बाहर की कम और भीतर की अधिक है फिर भी शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा की साधना यहाँ की जाती है इसीलिए यह सम्पूर्ण योग मार्ग है। जैसे हमारी साधना को सम्पूर्ण योग मार्ग कहा गया है वैसे ही हमारी प्रणाली को सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली कहा गया है। ईश्वर को एकांतिक साधना से भी प्राप्त किया जा सकता है परन्तु हम एक सामाजिक साधना कर रहे हैं। संघ की मान्यता है कि व्यक्ति तीन आयामों में साधना करता है- व्यष्टिगत, समष्टिगत और परमेष्टिगत। तीनों का ही लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना है। संघ की साधना संसार से भागने की नहीं अपितु संसार को साथ लेकर- परिवार, गांव, समाज और राष्ट्र के साथ रहकर ईश्वर को प्राप्त करने की है। अपनी चित्तवृत्तियों को नियंत्रित करके सावधानीपूर्वक समाज में रहें तो हमारी सामाजिक साधना भी परमेष्टिगत बन जाती है। हम बहुत सरल मार्ग अपना रहे हैं ताकि हम सब सामूहिक रूप से इस साधना को कर सकें। इसके लिए मैं आपको छोटे-छोटे सूत्र बताता हूं जिनका आपको विशेष ध्यान रखना है। पांच सूत्र ऐसे हैं जो यह बताते हैं कि क्या करना है और पांच सूत्र बताते हैं कि क्या नहीं करना है। योग की भाषा में इन्हें यम और नियम कहा जाता है। पहला सूत्र है- असत्य भाषण नहीं करना। दूसरा सूत्र है- किसी को कष्ट नहीं देना। तीसरा सूत्र है- जो इस संसार में है वह सब ईश्वर का है, इसे सदैव स्मरण रखें। चौथी बात है- ब्रह्मचर्य की, संयम की। पांचवा सूत्र है- संग्रह नहीं करना। यह पांच सूत्र बताते हैं कि क्या नहीं करना है, इन्हें यम कहा गया है। अब हम उन सूत्रों को जान लें जो बताते हैं कि क्या करना है, जिन्हें नियम कहा गया है। पहला नियम है -शुद्धि, शौच। दूसरा है- संतोष अर्थात जो मिला है उसमें सुखी रहने का भाव। तीसरा नियम है- तप अर्थात अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कष्टों की परवाह न करना। चौथा है- स्वाध्याय अर्थात स्वयं का आकलन करना, स्वयं की समीक्षा करना। पाँचवां नियम है - ईश्वर प्रणिधान अर्थात जो कुछ हम कर रहे हैं वह सब ईश्वर द्वारा ही कराया जा रहा है ऐसा जानना। यह जो सूत्र मैंने बताए हैं उन पर आप चलेंगें तो तो निश्चित रूप से वह भी प्राप्त हो सकेगा जो श्री क्षत्रिय युवक संघ का उद्देश्य है। यह जो सूत्र आपको बताए गए हैं इन पर आचरण करना आपके ही हाथ में हैं। यह आचरण ही आपके लिए पुरुषार्थ है। व्यवस्था हो गई है, नियति और नीति बन गई है शेष सभी आपके हाथ में हैं। अब मैं आपको इस साधना में आने वाली अड़चनों के सम्बन्ध में भी बताना चाहता हूँ। आने वाली भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक अड़चनों से आपको सावधान करना चाहता हूँ। हमारे मनीषियों ने मनुष्य के छः शत्रु बताए हैं जिनसे सदैव सावधान रहना है। ये सभी हमारे भीतर रहने वाले शत्रु है। इनमें सबसे बड़ा शत्रु है - काम। काम का अर्थ हमारी कामनाओं से, इच्छाओं से हैं। इनसे मुक्ति का मार्ग यही है कि संघ द्वारा जैसा हमको कराया जाए वैसा ही हम करते जाएं, अन्य कोई इच्छा नहीं रखें। दूसरा शत्रु है - क्रोध। इसे नरक का द्वार भी कहा गया है। तीसरा है- मद अर्थात अहम भाव। चौथा है - मोह अर्थात देखी-सुनी वस्तुओं, स्थान आदि से लगाव। पांचवा शत्रु है लोभ और छठा है- ईर्ष्या। ये छः शत्रु ही हमारी भौतिक, मानसिक व आध्यात्मिक उन्नति के बाधक बनते हैं। इन आंतरिक शत्रुओं को हमें सदैव देखते रहना है और इनसे संघर्ष करते रहना है तभी हम सच्चे अर्थ में क्षत्रिय बन सकेंगे। श्रीमद्भागवत गीता भगवान श्री कृष्ण द्वारा गाया हुआ गीत है। यह श्रीकृष्ण और अर्जुन के बीच का संवाद है, यह जीव और ब्रह्म के बीच का संवाद भी है। जीव के संशयों का, समस्याओं का समाधान भगवान द्वारा गीता में बताया गया है। जो अर्जुन के संशय थे वही हमारे भी है। अर्जुन का प्रश्न था कि हवा की गति से चलने वाले इस मन को किस प्रकार रोका जाये? हमारी भी यही समस्या है। मन को स्थिर किए बिना जीवन में स्थिरता नहीं आती। संघ के शिविरों में हमको स्थिरता का संदेश अभ्यास के द्वारा दिया जाता है। भगवान ने भी इस मन को नियंत्रित करने के लिए अभ्यास और वैराग्य का मार्ग बताया है। जहाँ-जहाँ हमारा राग है उनसे वैराग्य करें। मन को पकड़ में लाने के लिए इसको निरंतर देखते रहें। यही अभ्यास है। मन जब पकड़ में आ जाता है तो वह स्थिर हो जाता है। संघ भी यहाँ विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आपके मन को स्थिर करने का अभ्यास करवा रहा है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना का उद्देश्य इस संसार को, मानव जाति को, प्राणिमात्र को कष्टों से बचाना, तनाव से मुक्त करना, उनको स्वस्थ रखना, उनको स्वच्छ बनाना है। ऐसा एक प्रबल शासक के बिना संभव नहीं है इसीलिए हमारे पूर्वजों ने शासन व्यवस्था को संभाला और इतिहास निर्मित किया। वर्णव्यवस्था के अनुसार प्राणिमात्र की रक्षा का दायित्व क्षत्रिय को मिला। सम्पूर्ण विश्व परमात्मा का शरीर है ऐसा मानकर ही क्षत्रिय ने अपना दायित्व निभाया। आज जो पतन की स्थिति है उसे बदलने के लिए भी क्षत्रिय को शासन व्यवस्था संभालनी होगी लेकिन उससे पूर्व क्षत्रिय को स्वयं को तैयार करना पड़ेगा। संघ उसी की साधना कर रहा है। संघ में जो छोटी-छोटी बातों से शिक्षण दिया जा रहा है वे बातें बीज रूप में है जिनमें महान उद्देश्य छिपा हुआ है। इसीलिए एक-एक बात को ध्यान से सुनने व मानने की आवश्यकता है। संघ के इस शिविर में आपको जो शिक्षा दी जा रही है वह केवल इस शिविर के लिए ही नहीं अपितु जीवन के लिए है। आप संघ के संदेश के संवाहक है। आप के जीवन के व्यवहार के माध्यम से यह संदेश संसार तक पहुंचना चाहिए। ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को ऐसी ऊर्जा, ऐसी शक्ति दी है जिसके द्वारा वह समस्त बाधाओं को जीत सकता है। इस सुप्त शक्ति को योग की भाषा में कुंडलिनी शक्ति कहा गया है। इस शक्ति का जागरण कष्टदायक होता है किंतु जागृति के पश्चात वह शरीर में स्थित चक्रों का भेदन करती है और जीव को ब्रह्म तक पहुँचा देती है। संघ का मार्ग सम्पूर्ण योग मार्ग है, इसमें हमारी भीतरी शक्तियों का जागरण स्वाभाविक रूप से होता है। किन्तु यह जागरण हमारे ही ऊपर निर्भर है। भीतर जो शक्ति है उसे जागृत करना ही हमारी साधना है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शाखा अमृत

(मेरी साधना)

कोरोना संकट के कारण उत्पन्न परिस्थिति के कारण वर्चुअल शाखा का प्रारंभ 13 मई को किया गया जो निरंतर जारी है। वर्तमान में इसमें श्रद्धेय आयुवानसिंह की पुस्तक 'मेरी साधना' पर संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास का मार्गदर्शन मिल रहा है। गत अंक से आगे का मार्गदर्शन।

वर्चुअल शाखा की 14 सितंबर से 26 सितंबर तक प्रसारित कड़ियों में श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' के अगले अवतरणों पर चर्चा करते हुए संचालन प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास ने बताया कि साधना-क्षेत्र में जब साधक संघर्ष के लिए तत्पर होता है तो उसे अपने परिवार के प्रेम और मोह को भी जीतना पड़ता है। समर विजय के पूर्व प्रणय विजय करना आवश्यक होता है। पत्नी का प्रेम, माता का वात्सल्य, पिता की आशाएं, बहिन का स्नेह, संतान का मोह- इन सभी के बंधनों को साधक को तोड़ना पड़ता है। जब ऐसी स्थिति आती है और ममता पर कर्त्तव्य को प्राथमिकता देनी होती है तब साधक को यह अनुभव होता है कि क्षात्रधर्म कितना कठोर है। उसे ममता पर विजय पाना शत्रु पर विजय पाने से भी अधिक दुष्कर जान पड़ता है। स्वजनों के मोह पाश को तोड़ने के उपरांत भी साधक अपने गांव और उसके पवित्र वातावरण को स्मरण करके भावुक हो उठता है। किन्तु राष्ट्र यज्ञ की क्षीण पड़ती ज्वाला को देखकर पूर्वजों द्वारा स्थापित महान परंपरा को जीवित रखने के लिए कृतसंकल्प होकर साधक अपना सर्वस्व आहूत करने को तैयार हो जाता है। अब साधक अपने लिए मित्रता और सहयोग की कसौटी भी निर्धारित कर लेता है। वह अपने साथियों को सावधान करते हुए कहता है कि जो मेरे जीवन-ध्येय को स्वीकार न करते हों, वे अभी से अलग हो जाएं क्योंकि साधना की अंतिम अवस्था में उदासीनता और तटस्थता का अर्थ विश्वासघात होगा। साधना का यह मार्ग तलवार की धार पर चलने के समान कठिन है, अतः अंत तक साथ देना जिन्हें स्वीकार हो, वे ही साथ चलें। इस प्रकार स्वजनों की ममता पर विजय प्राप्त करके जब साधक आगे बढ़ता है तो उसके अपने भी पराए बनकर उसकी साधना का विरोध करने लगते हैं। यद्यपि यह विरोध सैद्धांतिक धरातल पर न होकर आत्म-लघुत्व की हीन भावना से उद्भूत होता है। ऐसे विरोधियों को साधक दया और क्षमा का पात्र समझता है। साधक के विरोधी उसके इतिहास, संस्कृति और चेतना को नष्ट करना चाहते हैं परंतु साधक अपने अजेय आत्म-संकल्प से उनकी चुनौती को ध्वस्त कर देता है। निकटदर्शी और अल्पज्ञ लोग साधना की महत्ता को न समझकर चमत्कार और शक्ति के प्रदर्शन की मांग करते हैं परंतु साधक ऐसी बहिमुर्खी साधना को नकारता है और अपने अभीष्ट मार्ग पर दृढ़तापूर्वक चलता रहता है। यद्यपि इस मार्ग पर चलते हुए निराशा, शिथिलता, निरुत्साह, आलस्य, प्रमाद, भय, विकलता आदि का भी सामना साधक को करना पड़ता है तथा इन्द्रियों के अधोगामिनी होने का खतरा भी उपस्थित होता है। साधना की धीमी प्रगति भी साधक को क्षुब्ध करती है। तब साधक अपनी साधना हेतु सच्चे मित्र की खोज करता है और त्याग को इसके लिए सर्वाधिक योग्य पाता है। साधना की उत्कर्षपूर्ण अवस्था में साधक को अंतमुर्खी व बहिमुर्खी संघर्षों में रत होना पड़ता है क्योंकि साधना की उत्पत्ति, स्थिति और लय तीनों ही संघर्षमय होते हैं। संघर्षरत होकर भी सच्चा साधक पराजय से भयभीत नहीं होता और हर ठोकर के बाद द्विगुणित उत्साह से साधना में जुटता है क्योंकि वह जानता है कि प्रयत्न और पुरुषार्थ सभी पराजयों को विजयश्री में बदलने का सामर्थ्य रखते हैं। निरंतर प्रयत्न कभी निष्फल नहीं जाता परंतु उसके साथ एक शर्त भी है कि सच्चे सुख की चाह रखने वाले को दारुण दुख को झेलने को भी सहर्ष तैयार रहना चाहिए। शरीर, मन और आत्मा की साधना द्वारा संघर्ष को निर्मंत्रित करना पड़ता है। शत्रु से प्रतिशोध साधक की आत्म-पीड़ा का महान लक्ष्य है और इस लक्ष्य की प्राप्ति पर ही साधना को संजीवनी शक्ति मिलती है। साधक को यह भी अनुभव होता है कि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन से ही स्वस्थ जीवन का निर्माण होता है और ऐसा करना साधना के स्वास्थ्य और जीवन के लिए भी आवश्यक है। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ में खेलों का भी नियमित अभ्यास किया जाता है। संघ की साधना बालक, तरुण और प्रौढ़ सभी के लिए उपयुक्त और पूर्ण है। संघ के साधक का प्रमुख साधन प्रेम और विश्वास है जिससे वह अपने साथियों के हृदय को जीतता है। यदि कभी भाग्य भी साधक की साधना को नष्ट करने पर उतारू हो जाय तो भी साधक में इतना साहस होना चाहिए कि वह दैवी विधान को भी चुनौती दे सके। किन्तु यदि साधक परकीया विचार प्रणाली से आकृष्ट हो जाता है तो वह अपनी साधना का स्वयं ही शत्रु बन जाता है। इसलिए साधक को अपनी विचारधारा के सदैव निकट संपर्क में रहना चाहिए। आगे नवधा भक्ति के सम्बंध में विभिन्न शास्त्रीय संदर्भों को उद्धृत करते हुए संचालन प्रमुख जी ने कहा कि साधक अपनी सत्ता के स्वामी परमेश्वर के चरणों में अपने श्रद्धा सुमन विभिन्न माध्यमों से अर्पित करता है, इन माध्यमों को ही नवधा भक्ति कहा गया है। केवल शक्ति का संचय मनुष्य को पतित कर सकता है इसीलिए साधक को दृढ़ता को प्राप्त करना चाहिए। दृढ़ता से टकराकर सभी विरोध नष्ट हो जाते हैं। दृढ़ता की प्राप्ति का सरलतम मार्ग है अभ्यास की पुनरावृत्ति, अतः साधक को निरंतर अभ्यास में लगे रहना चाहिए।

(पृष्ठ एक का शेष)

संघर्ष के... इसीलिए उनको इस वर्तमान व्यवस्था में चारों ओर से आक्रमण झेल रहे समाज को संघर्षरत कर उस संघर्ष के सारथी कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। चाहे आजादी के तुरन्त बाद हुए चौपासनी आंदोलन के सफल संचालन में उनकी महत्ती भूमिका हो चाहे 1952 के आम चुनावों में पूरे देश में एक छत्र जीत की ओर अग्रसर कांग्रेस पार्टी के खिलाफ जोधपुर के महाराजा हणवंतसिंह जी के अभियान के रणनीतिकार के रूप में उनकी भूमिका हो। इसके उपरान्त आम राजपूत की आजीविका के साधन कृषि भूमि को छीनकर उसे आर्थिक रूप से पंगू बनाने के सरकारी प्रयास के खिलाफ दो बार भूस्वामी आंदोलन के रूप में किया गया उनका प्रयास भी पूरे समाज को अन्याय के खिलाफ खड़ा करने का अतुलनीय उदाहरण है। नई व्यवस्था में संघर्ष के नए साधनों को अपनाकर समाज की प्रतिक्रिया को जागृत करने में उनकी सारथी की भूमिका ने ही उस समय एकछत्र सत्ता स्थापित कर चुके सत्तासीनों को समझौते के लिए मजबूर किया। राजपूत समाज को स्वभाव के विपरीत अहिंसक तरीके से आंदोलन के लिए तैयार करना एवं इतने बड़े आंदोलन को अहिंसक तरीके से समस्त सरकारी उत्पीड़न को सहकर अंजाम तक पहुंचाना उनके सुनियोजित सारण्य का ही परिणाम था। उसके बाद भी जीवन भर राजस्थान में वैकल्पिक राजनीतिक ध्रुव विकसित करने का उनका संघर्ष चिरस्मरणीय है। इस संघर्ष के कारण उन्हें सत्ता का कोपभाजन भी बनना पड़ा। यहां तक की उनकी रुग्णावस्था में उनके ईलाज में भी इस बदले की भावना का प्रभाव रहा लेकिन वे अंत समय तक एक योद्धा की भांति संघर्ष करते रहे। उनकी संघर्षशील प्रकृति ने ही उनके सम्पर्क में आने वाले लोगों में संघर्ष की वृत्ति को जन्म दिया और उसी का परिणाम था कि तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी समाज में संघर्ष की प्रवृत्ति बनी रही और मुखर भी हुई। ऐसे ही संघर्ष के सारथी की 100वीं जयंती हम आगामी 17 अक्टूबर को मनाने जा रहे हैं। आएं हम उनके संघर्ष से प्रेरणा लेकर अनुगमन करने की क्षमता देने की हम उनसे ही प्रार्थना करें।

जागृति... वर्तमान में आई विपरीत परिस्थिति भी ऐसी ही है, घबराएं नहीं, सावधानी रखें एवं कर्मशील रहें। हमारे पूर्वजों ने ऐसी अनेक कठिन परिस्थितियों से गुजर कर इतिहास बनाया है। ऐसी मुश्किल ही हमें सोचने को मजबूर करती है। परिस्थिति के अनुकूल साधनों के अपना कर आगे बढ़ने को मजबूर करती है। इसीलिए इस संबंध में अपना चिंतन जारी रखें। अपने बारे में भी चिंतन करें और स्वयं के द्वारा किए जाने वाले संघ कार्य के बारे में भी चिंतन करें। एक प्रांत प्रमुख के प्रश्न का जवाब देते हुए माननीय महावीरसिंह जी ने कहा कि महामारी को देखते हुए सावधानीपूर्वक कार्य करें। आप संघ की संपत्ति हैं, आपकी हानि संघ की हानि है इसीलिए रुकना नहीं है, चलते रहना है लेकिन सावधानी भी निरन्तर बनाए रखनी है। बैठक में लगभग 80 दायित्वाधीन स्वयंसेवक उपस्थित रहे। प्रारम्भ में सभी संभाग प्रमुखों ने अपना व अपने प्रांत प्रमुखों का परिचय दिया। संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह जी बैण्यांकाबास ने विगत मई माह से अब तक हुए वर्चुअल कार्यक्रमों की जानकारी दी। महामारी के दौरान सक्रिय रहने के लिए अपनाए गए न्यूनतम कार्यक्रम की जानकारी दी। आगामी 17 अक्टूबर को संघ के द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य आयुवानसिंह जी हुडील की 100वीं जयंती के उपलक्ष में मनाए जाने वाले जयंती सप्ताह के बारे में जानकारी दी। इसमें होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में अधिकाधिक प्रचार कर वर्चुअल कार्यक्रमों में अधिकतम लोगों को जोड़ने का प्रयास करने का निर्देश दिया। संभाग स्तर पर भी इस सप्ताह के दौरान विभिन्न कार्यक्रम करने के लिए कहा। संघशक्ति एवं पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता पर महामारी के कारण प्रभाव पड़ा है। उसके लिए भी प्रयास करने को कहा। साथ ही संघशक्ति एवं पथप्रेरक के लिए सामग्री भेजने का भी आग्रह किया।

(पृष्ठ छह का शेष)

शाखा अमृत... गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने जिस अविनाशी योग की बात कही है, जिस गोपनीय ज्ञान की बात कही है वही ज्ञान पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से दिया है। संघ की साधना में गीता का निष्काम कर्मयोग पूर्णतः निहित है। संसार में ऐसा शिक्षण और कहाँ मिलता है? यह शिक्षण जब आपके जीवन में उतरेगा तब आप संसार के लिए अनुकरणीय बन जाएंगे। हमने अष्टांग योग की जो बात की है उसमें यम, नियम व आसान के बाद जो अंग आता है वह है प्राणायाम। संघ में हम जो ग्रहण करते हैं, उस पर मनन करते हैं और उस पर चर्चा करते हैं वह प्राणायाम का ही रूप है। इसके बाद पाँचवां अंग है - प्रत्याहार। मनन किए हुए ज्ञान के प्रति अपने अंतःकरण को क्रियाशील करना ही प्रत्याहार की साधना है। स्वानुशासन से ही प्रत्याहार घटित होता है। गीता में कहा गया है कि श्रद्धावान, तत्पर और जितेंद्रिय व्यक्ति को ही ज्ञान प्राप्त होता है। संघ जो ज्ञान दे रहा है उसको प्राप्त करने के लिए भी यह तीनों शर्तें पूरी होना आवश्यक है। संघ के उद्देश्य से हम अपने आप को बांध लें, संघ को हमारे भीतर उतरकर कार्य करने दें। पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'गीता और समाजसेवा' में समझाया है कि समाज सेवा क्या है और गीता इस बारे में क्या कहती है।

गीता पांच हजार वर्ष बाद भी उतनी ही प्रासंगिक है क्योंकि यह हमें समग्र जीवन का पाठ पढ़ाती है। इसीलिए तनसिंह जी ने गीता को श्री क्षत्रिय युवक संघ का आधार बनाया। गीता की ही भांति संघ भी चार बिंदुओं का बार-बार स्मरण करवा कर उन पर विशेष जोर देता है। वे चार बिंदु हैं- आचार (आचरण), विचार, आहार तथा विहार। क्षत्रिय संसार का मार्गदर्शक रहा है और इसीलिए संसार के पतन का दायित्व भी क्षत्रिय का ही है। जब से क्षत्रिय का आचार, विचार, आहार व विहार दूषित हुआ तब से संसार भी पतन की राह पर चल पड़ा है। संघ इन चारों को शुद्ध करने का कार्य कर रहा है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने दो प्रकार की प्रवृत्तियां तथा सम्पदाएँ बताई हैं- राक्षसी और दैवीय। इनके आधार पर ही दो प्रकार के व्यक्ति भी बताए हैं दैवीय स्वभाव वाले तथा आसुरी स्वभाव वाले।

मनुष्य के स्वभाव को, उसकी प्रकृति को प्रभावित करने वाले तीन गुण गीता ने बताए हैं, वे हैं- सत, रज व तम। सतोगुण व तमोगुण नदी के दो किनारों की भांति हैं और रजोगुण उन्हें जोड़ने वाली नदी है। रजोगुण यदि सतोगुण से मिलता है तो व्यक्ति क्षत्रिय बन जाता है और यदि तमोगुण से मिलता है तो मनुष्य राक्षस बन जाता है। हम राजपूतों में रजोगुण की प्रधानता है। इस रजोगुण को सतोगुण के साथ जोड़कर सच्चे क्षत्रिय का निर्माण करना ही श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना है। आपको क्षत्रिय बनाने के लिए ही संघ इन शिविरों का आयोजन करता है। हम अपने भीतर उतर कर अपने शत्रु व मित्र को पहचान जाएं और अपने भीतर के सत्व को विजयी बनाएं, यही श्री क्षत्रिय युवक संघ की, पूज्य तनसिंह जी की और परमेश्वर की चाह है।

खनन माफिया से संघर्ष में शहीद हुए भवानीसिंह

बाड़मेर जिले के तामलोर निवासी भवानीसिंह दौसा जिले में बॉर्डर होमगार्ड के रूप में कार्य करते हुए बजरी माफिया से संघर्ष में शहीद हो गए। उन्हें डीजी होमगार्ड प्रशस्ति डिस्क व प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया जाएगा। होमगार्ड विभागीय कल्याण बोर्ड से 2 लाख व सरकार की तरफ से 20 लाख रुपए उनके परिवार को सहायता के रुप में दिए जाएंगे एवं परिवार के एक सदस्य को होमगार्ड स्वयंसेवक के रूप में अनुकंपात्मक नामांकन भी प्रदान किया जाएगा।

(पृष्ठ दो का शेष)

प्रतिहार वंश... इसके बाद मिहिर भोज ने राष्ट्रकूटों पर आक्रमण किया। राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण द्वितीय उस समय चालुक्यों के साथ युद्ध में उलझा हुआ था। मिहिर भोज ने राष्ट्रकूटों को नर्मदा नदी के तट पर परास्त किया, इस विजय के परिणाम स्वरूप मालवा पर प्रतिहारों का अधिकार हो गया। इसके उपरान्त मिहिर भोज ने गुजरात पर अधिकार कर लिया। कालान्तर में मिहिर भोज और राष्ट्रकूट शासक कृष्ण के मध्य उज्जयिनी में एक भीषण युद्ध हुआ जो अनिर्णित रहा। मिहिर भोज की शक्ति से भयभीत अरबों ने उसके शासन काल में कभी आक्रमण करने का साहस नहीं किया। भारत की पश्चिम सीमा पर स्थित अरबों द्वारा स्थापित सैन्य राज्यों को भी मिहिर भोज ने सेना भेज कर भारत भूमि से खदेड़ दिया। उसने प्रतिहार साम्राज्य का चतुर्दिक विस्तार किया। उत्तर पश्चिम में प्रतिहार साम्राज्य का विस्तार पंजाब तक था, वहीं राजपूताना गुजरात का अधिकांश भाग प्रतिहार साम्राज्य में था। पूर्व में प्रतिहार साम्राज्य की सीमाएं बंगाल तक थीं वहीं मालवा भी साम्राज्य का एक भाग था। मिहिर भोज वैष्णव धर्मानुयायी था। उसने 'आदि वाराह' तथा 'प्रलास' जैसी उपाधियां धारण की। उसके शासन के समय आया अरब यात्री सुलेमान उसकी अपार सैन्य शक्ति व प्रशासनिक व्यवस्था की प्रशंसा करता है। उसने भारत में अरबों के विस्तार को ना केवल रोका अपितु उन्हें भारत भूमि से दूर खदेड़ दिया। मिहिर भोज ने 885 ई. तक शासन किया। निसन्देह वह प्रतिहार वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था।

हीरसिंह दौलतपुरा का देहावसान

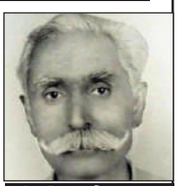
हीरसिंह दौलतपुरा

संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक **हीरसिंह दौलतपुरा** का 27 सितम्बर को देहावसान हो गया। उन्होंने अपना पहला शिविर सितम्बर 1950 में बीकानेर में किया। उन्होंने अपना जीवन में 16. उ.प्र.शि., 24 मा.प्र.शि., 27 प्रा.प्र.शि. एवं 1 विशेष शिविर किया। परमेश्वर उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देवें।

कानसिंह बोघेरा का देहावसान

कानसिंह बोघेरा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक एवं सीमा सुरक्षा बल से सेवानिवृत कमांडेट **कानसिंह बोघेरा** का 24 सितम्बर को प्रातः देहावसान हो गया। उम्र के इस पड़ाव में भी कुछ कर गुजरने की चाह को बार-बार अपने साथी स्वयंसेवकों के बीच प्रकट कर प्रेरणा देने वाले कानसिंह अगस्त 1957 में जयपुर में आयोजित प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर में पहली बार संघ के सम्पर्क में आए। उन्होंने अपने जीवन में 10 उ.प्र.शि., 17 मा.प्र.शि., 23 प्रा.प्र.शि., एवं 4 विशेष शिविर किए। उन्होंने 1962 में भारतीय सेना ज्वाइन की एवं 1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध में भाग लिया। 1966 में आप बी.एस.एफ. में भर्ती हुए व 1972 की लड़ाई में अग्रिम मोर्चे पर नेतृत्व किया। आप कमांडेंट के पद से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में वे बीकानेर में ही निवासरत थे एवं सभी प्रकार के सामाजिक कार्यों में सक्रिय थे। उनकी अंतिम यात्रा में बी.एस.एफ. के सशस्त्र गाइड द्वारा सलामी दी गई। पथप्रेरक परिवार आपको हार्दिक श्रृद्धांजलि अर्पित करता है।

ठा. शंभूसिंह राजावत का देहावसान

ठा. शंभूसिंह राजावत

प्रतिष्ठित साहित्यकार **ठा. शंभूसिंह राजावत** 'अल्पज्ञ' गांव खारेड़ा तहसील टोडारायसिंह जिला टोंक का 15 सितम्बर को निधन हो गया। आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। गद्य व पद्य दोनों प्रकार की अनेक रचनाएं प्रकाशित होती रही हैं। अनेक वर्षों से संघशक्ति में भी आपकी रचनाएं प्रकाशित होती रही हैं। संघशक्ति में प्रकाशित होने वाली चित्रकथाओं के रचनाकार ब्रजराजसिंह आपके पुत्र हैं। पथ प्रेरक परिवार की आपके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदनाएं व्यक्त करता है।

हमारे प्रिय साथी

श्री महेन्द्र प्रताप सिंह

गिराब (आर.ए.एस.)

का प्रादेशिक सेना में

लेफ्टिनेंट के पद पर चयन

होने पर हार्दिक बधाई एवम्

उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

महेन्द्रसिंह, तारातरा

नेपालसिंह, तिबणियार

नरेशपालसिंह, तेजमालता

शैलेन्द्र सिंह, कानोड़

छुगसिंह, गिराब

तनवीर सिंह, फोगेरा

गणपतसिंह, हुरो का तला

आसूसिंह, खारा

कानसिंह, खारा

युवराजसिंह, जानसिंह की बेरी

नीम्बसिंह, ताणू रावजी

वीपेन्द्रसिंह, चाडी

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org